UNIVERSITY NEWS 23 NOVEMBER 2025

AMAR UJALA

लविवि : गणेश वंदना व पंजाबी डांस ने मोहा मन

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के 105वें स्थापना दिवस सप्ताह के तहत सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए। एपीसेन सभागार में वैष्णवी गुप्ता ने गणेश वंदना व नृत्य की प्रस्तुति दी। एकांश अवस्थी ने हमारा विश्वविद्यालय शीर्षक से कविता पाठ किया। वैभवी और आयुषी ने पंजाबी डांस से दर्शकों को उत्साह से भर दिया। प्रतिभागियों को कुलपति प्रो. मनुका खन्ना ने प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। इसके अलावा इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्यूटिकल साइंसेज में प्री-फाउंडेशन वीक उत्साहपूर्वक मनाया गया।

- जंतु विज्ञान विभाग पूर्व छात्र संगठन का पहला पूर्व छात्र मिलन समारोह मनाया गया। इस अवसर पर लगभग 100 पूर्व छात्र शामिल हुए। इनमें सबसे वरिष्ठ प्रतिभागी प्रो. भूमित्र देव थे, जो 1958 बैच से हैं और विभागाध्यक्ष के अलावा पांच विश्वविद्यालयों के कुलपति भी रह चुके हैं।
- शिक्षाशास्त्र विभाग में हरित व स्वच्छ विवि परिसर अभियान का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में प्रो. तृप्ता त्रिवेदी, प्रो. मुनेश कुमार, प्रो. आकांक्षा सिंह सहित सभी शिक्षक शामिल हुए।
- अंग्रेजी व आधुनिक यूरोपीय भाषाएं विभाग ने भाषण प्रतियोगिता आयोजित की। इसमें अक्सा इरम को पहला और स्वाति को दूसरा पुरस्कार मिला। (संवाद)

25 को लविवि में रहेगा अवकाश

लखनऊ। लखनऊ विवि में गुरु तेगबहादुर साहिब के बलिदान दिवस पर 25 नवंबर को अवकाश रहेगा। इस संबंध में विश्वविद्यालय की कुलसचिव भावना मिश्रा ने शनिवार को आदेश जारी किया है। उन्होंने बताया कि ये अवकाश पहले 24 नवंबर को होना था जिसे सरकार के निर्णय के बाद 25 नवंबर कर दिया गया है। (संवाद)

वर्षों बाद एक-दूसरे से मिले तो खुली यादों की गठरी

जासं • लखनऊ : वर्षों बाद एक-दूसरे से मिले तो यादों की गठरी खुल गई। लखनऊ विश्वविद्यालय में पढ़ाई के दिनों में कैसे ठिठौली करते थे, बैंच पर बैठे-बैठे चुटकियां काट लेते थे, पढ़ते-पढ़ते किताबों से सिर छिपा लेते थे, टोटी से पानी पीते और मैदान में घंटों खेलते थे। जंतु विज्ञान विभाग के पूर्व विद्यार्थी जब साथ में बैठे तो अनेक बातें हुईं। विश्वविद्यालय के जंतु विज्ञान-पूर्व छात्र संगठन के औपचारिक पंजीकरण के बाद यह पहला पूर्व छात्र मिलन था। यह सिर्फ मुलाकात का मौका नहीं था, बल्कि विभाग की विरासत, रचनात्मकता और साझा यादों का उत्सव भी था। विभागाध्यक्ष प्रो. एम. सिराजुद्दीन ने कहा कि पूर्व छात्र किसी भी संस्था की असली धरोहर होते हैं और हमारी धरोहर समृद्ध है। 1958 बैच के विद्यार्थी रहे प्रो. भूमित्र देव पांच विश्वविद्यालयों के कुलपति रह चुके हैं। उनके साथ प्रो. जीएन वर्मा, प्रो. मीनाक्षी श्रीवास्तव, प्रो. पद्मा सक्सेना, प्रो. प्रताप सिंह, प्रो. यूडी शर्मा, प्रो. ओंकार और प्रो. एसपी त्रिवेदी जैसे वरिष्ठ पूर्व छात्र और सेवानिवृत्त शिक्षक भी उपस्थित रहे।

HINDUSTAN

एलयू में छात्रों की प्रतिभा को दिया गया सम्मान

लखनऊ, संवाददाता। लखनऊ विश्वविद्यालय में 105वें स्थापना दिवस सप्ताह के तहत कई विभागों में कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। इसके मद्देनजर एपी सेन हॉल में भव्य सांस्कृतिक संध्या और प्रमाण पत्र वितरण कार्यक्रम हुआ। विशिष्ट अतिथि कैलाश छात्रावास की प्रोवोस्ट प्रोफेसर बबीता जायसवाल, अंग्रेजी विभाग की हेड प्रो. नाजनीन खान और सीपीसी निदेशक प्रो. अनूप कुमार भारतीय रहे। कार्यक्रम की शुरुआत वैष्णवी गुप्ता ने गणेश वंदना नृत्य से की। इसके बाद एकांश अवस्थी ने हमारा विश्वविद्यालय शीर्षक से प्रभावशाली कविता पाठ किया। वैभवी और आयुषी की ओर से प्रस्तुत पंजाबी डांस ने दर्शकों को उत्साह से भर दिया। निदेशक सांस्कृतिकी प्रो. आंचल श्रीवास्तव और विशिष्ट अतिथियों ने विजेता, प्रतिभागी छात्रों और आयोजक छात्रों को सर्टिफिकेट दिया। वहीं, फार्मेसी संस्थान में विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियां देकर उत्सव मनाया। विशिष्ट अतिथि एडिशनल डीएसडब्ल्यू प्रोफेसर अभिषेक तिवारी ने शुभारंभ किया।

एलयू में 105वें स्थापना दिवस सप्ताह के तहत कई विभागों में कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

पूर्व छात्रों ने पुरानी यादों को किया जीवंत

लखनऊ। एलयू के प्राणिशास्त्र विभाग में आयोजित पूर्व छात्र मिलन समारोह में जब बरसों बाद कई पूर्व छात्र एकत्रित हुए तो उनकी आंखें भर आईं। सर्द धूप में सभी ने अपने पुराने साथियों और शिक्षकों के साथ बातचीत का आनंद लिया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में संगीत, नृत्य और कविता की प्रस्तुतियों ने माहौल को जीवंत बना दिया। विभागाध्यक्ष प्रो. एम सिराजुद्दीन ने कहा कि पूर्व छात्र किसी भी संस्था की धरोहर होते हैं। प्रो. जीएन वर्मा, प्रो. मीनाक्षी श्रीवास्तव, प्रो. पद्मा सक्सेना उपस्थित रहे।

HINDUSTAN

विषम सेमेस्टर परीक्षा के प्रवेश पत्र जारी

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय में शैक्षिक सत्र 2025-26 विषम सेमेस्टर परीक्षा के तहत लगभग पौने तीन लाख परीक्षार्थियों के प्रवेश पत्र शनिवार को जारी कर दिए गए। परीक्षार्थियों को प्रवेश पत्र डाउनलोड करने के लिए एलयू की वेबसाइट पर जाना होगा। प्रवेश पत्र में त्रुटि है तो सुधार के लिए ऑनलाइन आवेदन करना होगा।

एलयू प्रवक्ता डॉ. मुकुल श्रीवास्तव ने बताया कि परीक्षा से जुड़े अपडेट के लिए विद्यार्थी वेबसाइट देखते रहें। इस बार परीक्षा 290 केंद्रों पर होगी। हर केंद्र पर सीसीटीवी कैमरे से निगरानी की जाएगी। सचल दलों की तैनाती भी रहेगी।

AMRIT VICHAR

लविवि | विभाग के 100 से अधिक पूर्व छात्रों ने लिया हिस्सा

पूर्व छात्र मिलन बना विरासत और रचनात्मकता का उत्सव

लविवि में पूर्व छात्र मिलन समारोह में जुटे 60 वर्ष पुराने विद्यार्थी। • अमृत विचार

- 1958 बैच के प्रो. भूमित्र देव समेत वरिष्ठ छात्र हुए शामिल

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

अमृत विचार: लखनऊ विश्वविद्यालय के जंतु विज्ञान विभाग में आयोजित पूर्व छात्र मिलन विभाग की विरासत, रचनात्मकता और साझा यादों का जीवंत उत्सव बना। कार्यक्रम की शुरुआत विभागाध्यक्ष प्रो. एम. सिराजुद्दीन के संबोधन से हुई। उन्होंने कहा कि पूर्व छात्र किसी भी संस्था की असली पूंजी होते हैं और ऐसे आयोजन भविष्य में शैक्षणिक व सामाजिक सहयोग की संभावनाओं को मजबूत करते हैं।

मिलन समारोह में विभाग के 100 से अधिक पूर्व छात्र शामिल हुए। इनमें 1958 बैच के प्रो. भूमित्र देव सबसे वरिष्ठ प्रतिभागी रहे, जो विभागाध्यक्ष रहने के साथ पाँच विश्वविद्यालयों के कुलपति भी रह चुके हैं। प्रो. जी.एन. वर्मा, प्रो. मीनाक्षी श्रीवास्तव, प्रो. पद्मा सक्सेना, प्रो. प्रताप सिंह, प्रो. यू.डी. शर्मा, प्रो. ओंकार और प्रो. एस.पी. त्रिवेदी जैसे वरिष्ठ पूर्व छात्र और सेवानिवृत्त शिक्षक भी मौजूद रहे। सभी ने सर्द धूप में पुराने साथियों के साथ मुलाकात का आनंद लिया।

कार्यक्रम में छात्र पत्रिका जूलॉजिक्स का विमोचन किया गया, जिसे विभाग की छात्र सांस्कृतिक समिति वाइटल्स जूलॉजिकल सोसाइटी ने तैयार किया है। एक विशेष पहल के रूप में मेमोरी रिकॉर्डिंग लैब भी स्थापित की गई, जहाँ पूर्व छात्रों ने अपने छात्र जीवन के अनुभव रिकॉर्ड कराए। इन्हें विभाग के इतिहास में संरक्षित किया जाएगा। इसी क्रम में मेमोरी बुक भी लॉन्च की गई, जिसमें पूर्व छात्रों ने अपने संदेश, तस्वीरें और यादें दर्ज कीं।

सांस्कृतिक प्रस्तुतियों और मनोरंजक गतिविधियों ने कार्यक्रम को जीवंत बनाते हुए सभी पीढ़ियों के बीच आत्मीयता बढ़ाई। आयोजकों ने कहा कि यह मिलन विभाग की निरंतरता, नवाचार और सामुदायिक भावना का उत्सव है, जो जंतु विज्ञान विभाग की वास्तविक पहचान को और सशक्त करता है।

DAINIK JAGRAN

दैनिक जागरण **सबरंग** — शहर को जानने के..

लखनऊ, रविवार, 23 नवंबर, 2025

सुझाव व प्रतिक्रिया के लिए लिखें : lucknow@lko.jagran.com

धरा से अंतरिक्ष तक चमकता लखनऊ विश्वविद्यालय

लखनऊ विश्वविद्यालय के 105वें स्थापना दिवस पर विशेष

ज्ञान, शोध और संस्कृति की आधारशिला पर खड़ा लखनऊ विश्वविद्यालय (लवि) अपनी एक सदी से अधिक समय की गौरवशाली यात्रा का उत्सव मनाने जा रहा है। इस अवधि में यह विश्वविद्यालय न सिर्फ उच्च शिक्षा का केंद्र बना, बल्कि यहां के विद्वान शिक्षकों ने वह पृष्ठभूमि भी तैयार की, जहां से निकली प्रतिभाएं धरती की सीमा लांघकर अंतरिक्ष अभियानों तक पहुंच गईं। विज्ञान, कला, साहित्य, राजनीति, सामाजिक नेतृत्व और प्रशासन सहित लगभग हर क्षेत्र में इस संस्थान के विद्यार्थियों की चमक ने इसे राष्ट्रीय से अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहचान दिलाई है। देश के पहले राजनीति शास्त्र विभाग की शुरुआत 1922 में लवि में ही हुई थी। ब्रिटिश काल में मिले इस अवसर का श्रेय प्रो. वीएस राम को जाता है। लखनऊ विश्वविद्यालय के 105वें स्थापना दिवस (25 नवंबर) पर संस्थान की अनवरत यात्रा के महत्वपूर्ण पड़ावों के साथ उपलब्धियों पर प्रकाश डाल रहे हैं **अखिल सक्सेना**...।

कैनिंग कालेज से विश्वविद्यालय तक : देश के 10 सबसे पुराने विश्वविद्यालयों में अपनी पहचान बनाने वाले लखनऊ विश्वविद्यालय का सफर 1864 में कैनिंग कालेज से शुरू होता है। टैगोर पुस्तकालय में संरक्षित अभिलेख बताते हैं कि 10 अगस्त 1862 को अवध के ताल्लुकेदारों ने बैठक कर लार्ड कैनिंग की याद में एक शिक्षण संस्थान बनाने का प्रस्ताव पास किया था। एक मई 1864 को इसकी शुरुआत हुसैनाबाद कोठी में अनौपचारिक रूप से स्कूल से हुई।

कुछ वर्षों बाद यह अमीनाबाद पहुंचा। फिर ऐतिहासिक लाल बारादरी इलाका-ए-फरह बख्श, परीखाना केसरबाग और उसके बाद बादशाहबाग परिसर में चला गया। शिक्षा के तीव्र विस्तार ने 1892 में कालिज कालेज को जन्म दिया और अंततः 25 नवंबर 1920 को कैनिंग कालेज को लखनऊ विश्वविद्यालय के रूप में पूर्ण विश्वविद्यालय का दर्जा मिला। संस्थान की यह विरासत 160 वर्ष पूरे कर चुकी है, जो इसे भारत के सबसे पुराने और प्रतिष्ठित 10 उच्च शिक्षा संस्थानों में शामिल करती है, लेकिन विश्वविद्यालय के रूप में संस्थान का 105वां वर्ष है।

वर्ष 1975 बैच के पूर्व छात्र एवं सेवानिवृत्त वरिष्ठ प्रोफेसर अरूप चक्रवर्ती बताते हैं कि 1975 में जब मैं कालिज्ञान तालुकेदार्स कालेज में 12वीं का छात्र था, तब सड़क के उस पार लखनऊ विश्वविद्यालय की भव्यता मुझे आकर्षित करती थी। बाद में यहीं से बीए और एआइएच एंड आर्कियोलाजी में एमए किया। यही वह स्थान है, जिसने मेरी सोच, दृष्टि और व्यक्तित्व को आकार दिया। वह बताते हैं कि विश्वविद्यालय को अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाने में कई महान शिक्षकों की भूमिका रही है, जिनमें अर्थशास्त्र एवं समाज शास्त्र विभाग के पहले अध्यक्ष प्रो. राधाकमल मुकर्जी, प्रो. डीपी मुकर्जी, वनस्पति विज्ञान के दिग्गज प्रो. बीरबल साहनी, केआर कानूनगो, प्रो. डीएन भजुमदार, भौतिक विज्ञानी प्रो. वली मोहम्मद, दर्शनशास्त्र के प्रो. काली प्रसाद, राजनीति शास्त्र के प्रो. वीएस राम आदि शामिल हैं। इन्होंने न सिर्फ शिक्षा दी, बल्कि एक ऐसी शैक्षणिक संस्कृति विकसित की, जिसने आने वाली पीढ़ियों को वैश्विक पहचान दिलाई। प्रो. चक्रवर्ती कहते हैं, यहां के छात्र धरती से लेकर अंतरिक्ष तक चमक रहे हैं।

विद्वान शिक्षकों के साथ छात्र-छात्राओं ने भी अंतरराष्ट्रीय फलक पर लवि का मान बढ़ाया है। इनमें पूर्व राष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा, कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री राम कृष्ण हेगड़े, राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री बरकतुल्लाह, पूर्व राज्यपाल सैयद सिब्ते रजी, लालजी टंडन, पूर्व मुख्यमंत्री सुरजीत सिंह बरनाला, पूर्व मुख्य न्यायाधीश आदर्श सेन आनंद, अंतरिक्ष विज्ञानी डा. ऋतु करिधल, पद्मश्री से अलंकृत विज्ञानी डा.नवीन खन्ना, गीतकार और गायक अमिताभ भट्टाचार्य, उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी, उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक, जस्टिस मनीष कुमार, लोक गायिका मालिनी अवस्थी, गीतकार एवं कवि प्रदीप, आइएएस अधिकारी लीना जौहरी, आइपीएस अधिकारी विनीता शर्मा, आइपीएस अधिकारी लक्ष्मी सिंह, अर्थशास्त्री राजीव कुमार सहित बहुत से ऐसे पूर्व छात्र-छात्राएं हैं।

13 संकाय | **51** विभाग | **16** इंस्टीट्यूट | **15** यूजी कोर्स | **67** पीजी कोर्स | **17,500** कैंपस में छात्र-छात्राएं

ग्रिफन ने बनाई थी टैगोर पुस्तकालय की डिजाइन

टैगोर पुस्तकालय की अपनी अलग पहचान है। इसे पहले लखनऊ विश्वविद्यालय पुस्तकालय के नाम से जाना जाता था। प्रसिद्ध आस्ट्रेलियाई वास्तुकार वाल्टर बर्ली ग्रिफन ने भारतीय और यूरोपीय वास्तुकला शैलियों का मिश्रण करते हुए इसके भवन को डिजाइन किया था। भवन की आधारशिला 1937 में रखी गई थी। इसका उद्घाटन 1941 में तत्कालीन कुलाधिपति सर मैनरिस हैलेट ने किया था। बाद में इसका नाम बदलकर नोबेल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर के नाम पर रखा गया, जो विश्वविद्यालय में अक्सर आते थे और इस पुस्तकालय से बहुत लगाव रखते थे। टैगोर पुस्तकालय में वर्तमान में पांच लाख 87 हजार 196 किताबें, दो हजार से अधिक दुर्लभ पांडुलिपियां, ई-जर्नल व 2510 ई-बुक्स हैं। इसके अलावा यहां सिक्कों, पांडुलिपियों, मूर्तियों और चित्रों का खजाना भी है। लखनऊ विश्वविद्यालय चार संग्रहालयों का गौरवशाली स्वामी भी है, जिनमें से कुछ 1920 के दशक के शुरुआती वर्षों के हैं।

टैगोर लाइब्रेरी

1951 में कुछ ऐसा था लखनऊ विश्वविद्यालय टैगोर पुस्तकालय • लवि

पुस्तकालय में संरक्षित दुर्लभ पांडुलिपियां • लवि

4.5 लाख छात्र-छात्राएं लवि और संबद्ध कालेजों को मिलाकर

561 संबद्ध महाविद्यालय पांच जिलों में

नैक ए प्लस प्लस की भी उपलब्धि

डीन एकेडमिक्स प्रो. गीतांजलि मिश्रा बताती हैं कि लवि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 लागू करने वाला पहला विश्वविद्यालय बना और नैक ए प्लस प्लस ग्रेड भी हासिल किया। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की ओर से राज्य विश्वविद्यालय में ग्रेड वन का दर्जा भी इसे मिला है। 2024-25 की एनआइआरएफ रैंकिंग में विश्व में 98 रैंक, वयूएस साउथ एशिया यूनिवर्सिटी में 244 रैंक से लेकर कई अच्छी रैंकिंग भी मिलीं। विदेशी छात्र-छात्राओं का रुझान बढ़ा, जिसकी वजह से इस बार विभिन्न देशों के 2355 छात्र-छात्राओं के आवेदन आए।

दो मार्च 1959 को लवि यूनियन एक्जीक्यूटिव के साथ पीएम जवाहर लाल नेहरू • लवि अर्काइव

पहले कुलपति थे राय बहादुर प्रो. जीएन चक्रवर्ती

लवि की स्थापना के समय 1920 में पहले कुलपति राय बहादुर प्रो. जीएन चक्रवर्ती बने। अब तक 42 कुलपतियों में सिर्फ दो महिला कुलपति हैं। इनमें 1998-99 में प्रो. रूपरेखा वर्मा तो वर्तमान में कार्यवाहक कुलपति प्रो. मनुका खन्ना हैं।

1971 के युद्ध में पाकिस्तान पर भारत की विजय का उत्सव विश्वविद्यालय में भी जोर शोर से मनाया गया था • लवि

लखनऊ विश्वविद्यालय से हमारी चार पीढ़ी जुड़ी

लवि से हमारी चार पीढ़ी जुड़ी है। बाबा प्रो. गोपी नाथ धवन शिक्षक थे। पिता भोलानाथ धवन ने किंग जार्ज मेडिकल कालेज से एमबीबीएस किया, तब वह लवि से संबद्ध था। फिर मैंने 1986 में एमएससी किया। उसके बाद छोटे बेटे आर्यन ने यहां से बी.एससी किया। हमारे समय में शिक्षक सिर्फ कंटामेंटल पढ़ाते थे, फिर हम लाइब्रेरी में नोट्स बनाते थे। इससे हर बच्चे के अलग नोट्स होते थे। क्लास के बाद साइंस सेंटीन में जाना और वहां चाय समोसे का अलग ही मजा था।

-प्रो. आलोक धवन, निदेशक, सेंटर आफ बायो मेडिकल रिसर्च

विभागाध्यक्ष छुट्टी पर तो कर देते थे क्लास बंक

लवि की यादें हमेशा ताजा रहती हैं। हमें अच्छे शिक्षक और माहौल दोनों मिले। 1984 से 88 तक बीए और एमए की पढ़ाई की। कैंपस में मिल्क बार होता था, जहां बैठकी लगती थी। पीजी के दौरान कई बाद जब विभागाध्यक्ष छुट्टी पर होते तो हम भी क्लास बंक कर देते थे। पैसे कक्षाएं रेगुलर चलती थीं। पीजी क्लाक बहुत फेमस होता था। लवि जब जाना हुआ तो उसी क्लास में बैठे जहां पढ़े थे, बहुत अच्छा लगा।

अजय कुमार उप्रेती, पूर्व राज्य सूचना आयुक्त

TOI

These LU students click online with digital brands

Anjanaya Singh | TNN

Two students from the department of journalism and mass communication at Lucknow University are making waves online by building their own digital brands 'Lucknow Wale' and 'Legend Photographers' all while pursuing their academic degrees.

Vikas Kumar Singh, 21, hails from Ballia and is the founder of 'Lucknow Wale', a content platform that captures the pulse of Lucknow through stories on city news, street life and local culture. A BCom honours graduate and currently in the third semester of Masters in journalism and mass communication, Vikas started the platform in Dec 2021. In just the past month, 'Lucknow Wale' has generated 115.1 million impressions, with a following of 92.8K on Instagram, 52.3K subscribers on YouTube and 19K followers on Facebook.

VINAY PRATAP SINGH

VIKAS KUMAR SINGH

"When I started 'Lucknow Wale' in Dec 2021, I just wanted to show a different side of Lucknow, the street stories, local issues and real people that often go unnoticed. My motivation came from seeing how little representation small cities get on national platforms. Social media gave me a space to amplify those unheard voices. The reach we've managed to build, especially on Instagram and YouTube, still feels surreal. It is rewarding to know that our work is not only being seen but also making people think about their city differently," said Vikas.

Vinay Pratap Singh, 30, from Raebareli, is behind 'Legend Photographers', a visual tribute to iconic global photographers such as Steve McCurry, Ansel Adams, Sebastiao Salgado, Masha Ivashintsova and Dorothea Lange. Launched in Oct 2022, the platform curates legendary photographic work and draws in a niche but growing audience of photography enthusiasts. His YouTube channel now has 25.7K subscribers. He is also currently pursuing third semester of Masters in journalism and mass communication

"Legend Photographers began out of pure admiration for the great photographers whose work shaped how the world sees reality. I wanted to create a space where young photographers could learn from legends like Dorothea Lange or Steve McCurry. Social media, especially YouTube, has been a game-changer. It helps connect a global audience with timeless visual storytelling. I feel proud that a project born out of passion is now educating and inspiring thousands. It's proof that thoughtful content still has a place online," said Vinay.